मध्यभारत की कला संस्कृति एवं पुरातत्व

नागेश दुबे
मोहन लाल चढ़ार

Published by
Satparkash Katla
SSDN PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
5A, Sahni Mansion, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-47520102
E-mail: ssdn.katla@gmail.com
www.ssdnbooks.com

मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्व

© प्रो. नागेश दुबे एवं डॉ. मोहन लाल चढ़ार

₹ 3500

सर्वाधिकार सुरक्षित। पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण 2017

ISBN: 978-93-8357-598-5

Printed at New Delhi, India

इस पुसत्क में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादकगण प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नही है

1 एरण की कला में प्रतिबिम्बित विविध सांस्कृतिक पक्ष

प्रो नागेश दुबे

मध्यप्रदेश के सागर जिले की बीना तहसील में स्थित सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक, सम्पदा से परिपूर्ण पुरास्थल 'एरण', जिला मुख्यालय से 77 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम दिशा में बीना नदी के तट पर स्थित है।[1] एरण, मध्यप्रदेश का साँची के पश्चात कला व प्रतिमाओं की विशालता, प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिरों व प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। किन्तु आज तक यह स्थान पर्यटकों की पहुँच से दूर है। एरण, साँची से लगभग 22 किलोमीटर व बीना तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।[2] एरण ने अनेक संस्कृतियों, व सभ्यताओं के उत्थान व पतन का काल देखा है। इसकी जानकारी हमें यहाँ से प्राप्त अनेक पुरावेशेषों से होती है। एरण से प्राप्त दूसरी व प्रथम शताब्दी ई.पू. में जनपदीय ताम्रमुद्राओं पर इस नगर का तत्कालीन नाम 'एरिकिण', 'एरकण्य' अभिलिखित है। गुप्तकालीन अभिलेखों में भी नगर की यही संज्ञा मिलती है।[3] एरण की जीवनदायनी बीना नदी अर्द्धचन्द्राकार रूप में प्रवाहित होती हुई एरण ग्राम को तीन ओर से सुरक्षा प्रदान करती है। चौथी ओर दक्षिण दिशा में लगभग 1750 ई.पू. में ताम्रपाषाणकालीन विशाल सुरक्षा प्राचीर व खाई का निर्माण किया गया था।[4] एरण की भौगोलिक स्थित को दृष्टि में रखते हुए यहाँ नवपाषाण, कायथा और ताम्रपाषाण संस्कृति (मालवा संस्कृति) के निर्माताओं ने इस सुरक्षित स्थल को निवास का केन्द्र बनाया। परवर्तीकाल में मौर्यों, शुंगों, सातवाहनों, शकों, नागों, गुप्तों, हूणों, गुर्जर–प्रतिहारों, परमारों, चंदेलों व कल्चुरियों तथा उत्तर मध्यकाल में क्षेत्रीय दांगी शासकों, सल्तनतकालीन व मुगलकालीन शासकों का भी एरण पर आधिपत्य रहा।

ताम्रपाषाणयुगीन, शक, नाग और गुप्तकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में एरण की विशिष्ट भूमिका रही है।[5] 1838 ई. में भारत के प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् टी.एस. बर्ट ने एरण की सर्वप्रथम खोज की। उन्हीं का अनुकरण करते हुए भारतीय पुरातत्त्व के प्रथम महानिदेशक जनरल अलेक्जेण्डर कर्निंघम ने 1874–75 ई. में इस क्षेत्र का सर्वेक्षण किया और यहाँ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं, अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट (जिल्द 9–10) में प्रकाशित करवाया। कालान्तर में एरण को प्रकाश में लाने का कार्य सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष व भारत के प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता प्रो.के.डी. बाजपेयी ने किया। एरण में 1960–61 ई. से 1964–65 ई. तक प्रो. के.डी. वाजपेयी